सब दिन एक समान नहीं होते हैं ओ रे मनवा | By Sanjay Chauhan |

सब दिन एक समान नहीं
होते हैं ओ रे मनवा
धूप कभी तो छांव कभी
होती है ओ रे मनवा

सब दिन एक समान नहीं
होते हैं ओ रे मनवा
जितने छाए दुख के बादल
छट जाएंगे मनवा
सब दिन एक समान नहीं
होते हैं ओ रे मनवा

राजा हो या रंक सभी के
जीवन में दुख आता है
ऐसा कोई नहीं धरती पर
केवल सुख जो पाता है
जैसा करम करेगा वैसा
फल पावे है मनवा

सब दिन एक समान नहीं
होते हैं ओ रे मनवा
धूप कभी तो छांव कभी
होती है ओ रे मनवा

दुख सहकर भी पंछी इतने
नील गगन में उड़ते हैं
सूरज की तपती किरणों से
फूल चमन में खिलते हैं
काली रात गुजरने पर ही
दिन आता है मनवा

सब दिन एक समान नहीं
होते हैं ओ रे मनवा
धूप कभी तो छांव कभी
होती है ओ रे मनवा

दुख तो ऐसा फंदा जिसने
राम को भी न छोड़ा रे
धरम की खातिर सीता मां को
जंगल में जा छोड़ा रे
दुख जीवन का साथी सुख तो
दो पल का है मेहमान

सब दिन एक समान नहीं
होते हैं ओ रे मनवा
धूप कभी तो छांव कभी
होती है ओ रे मनवा

जिस प्राणी ने दुख अपनाया
उसने ही सुख पाया है
सत्कर्मों से ही अपना
सोया हुआ भाग्य जगाया है
आज है दुख तो कल सुख होगा
धीरज रख रे मनवा

सब दिन एक समान नहीं
होते हैं ओ रे मनवा
धूप कभी तो छांव कभी
होती है ओ रे मनवा

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%b8%e0%a4%ac-%e0%a4%a6%e0%a4%bf%e0%a4%a8-%e0%a4%8f%e0%a4%95-%e0%a4%b8%e0%a4%ae%e0%a4%be%e0%a4%a8-%e0%a4%a8%e0%a4%b9%e0%a5%80%e0%a4%82-%e0%a4%b9%e0%a5%8b%e0%a4%a4%e0%a5%87-%e0%a4%b9%e0%a5%88/